रूस मे बदलती संस्कृति के चित्रण का
महान् मानवीय उपन्यास

ओरबोई

मिखाइल शोलोखोव
अनुवादक
गोपीकृष्ण 'गोपेश

धीरे…

चौथा खण्ड



राजकमल प्रकाशन

रूस में बदल

मूल्य दस रुपये

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली
मुद्रक
एवरेस्ट [illegible]४, चमेलियान रोड दिल्ली

हमारी धरती पर हलों की लीकें नहीं हैं
हमारी धरती पर घोड़ों की टापों के निशान हैं—
और
हमारी धरती में बीज नहीं,
    कज्जाकों के शीश बोए जाते हैं।
हमारा शान्त दोन नद जवान बेवाओं से जवान है—
हमारे दोन नद के प्रदेश में फूल नहीं
    यतीम फूलते हैं—
शान्त दोन की लहरों में
    हमारे पिताओं और माताओं के आंसू तरंगित हैं।
ओह दोन नद।
ओह, पिता दोन नद—
तुम बहते हो तो तुम्हारी धार
    इतनी गँदली क्यों होती है ?
मैं दोन नद
    मेरी लहरियां इतनी गँदली भला क्यों हों ?
मेरी गहराइयों से शीतल सोत फूटते हैं—
मेरे अन्तराल में शान्त दोन
    रुपहली मछलियां उछलती हैं।

एक पुराना कज्जाक गीत

रेजीमेंटो और आखिरी घुड़सवार यूनिटों के साथ जमाव के ठिकानों की तरफ रवाना कर दिया गया था।

इस बीच विद्रोही सेनाएँ सभी तरफ़ से घिर गइ। पर वे सजा देने वाली लाल फौजो के हमले को नाकाम करती रही। दक्षिण म, दोन के बायें किनारे पर, दो विद्रोही डिविजनें अपनी खाइयो मे डटी रही और उन्होने दुश्मन को पार पहुचने नही दिया, हालाँकि लाल सेना की बैटरियाँ पूरे मोर्चे पर फैली बहुत ही बेरहमी से उन पर बराबर गोले बरसाती रही। तीन दूसरी डिविजनो ने पश्चिम, उत्तर और पूब मे विद्रोहियो के सीमा क्षेत्रो की रक्षा की। इस सिलसिले मे उन्हें बडा नुकसान उठाना पडा। उत्तर पूर्वी क्षेत्र म तो नुकसान खास तौर पर ज्यादा हुआ। लकिन इन डिविजनो ने पीछे हटने की कोशिश नाम को भी न की और खोपर क्षेत्र की सीमाओ पर यह बडी ही मजबूती से अपने कदम जमाये रही।

तातारस्की के कज्जाक, जो अपने गाव के सामने के नदी किनारे मोर्चा बाँधे रहे उससे लाल फ़ौजो के बीच थोडी घबराहट फली। दूसरी तरफ कज्जाको को मजबूर होकर जो निकम्मापन छोडना पडा उससे वे ऊब गए। एक रात उन्होंने चुपचाप बजरो पर सवार होकर नदी पार की और दाहिने किनारे पर पहुचकर, लाल फौजियो की एक चौकी अचानक हो हथिया ली चार लोगो को मार डाला और एक मशीनगन छीन ली। दूसरे दिन लाल फौजी व्योशेन्स्काया के निचले इलाको स एक बटरी ले आये, और कज्जाक खाइयो पर पूरे ज़ोर शोर से आग छिडकन लग। तोपो के गोले पेडो के बीच फटे तो कम्पनी ने हडबडाकर अपनी खाइयाँ छोड दी और कम्पनी के लोग नदी स पीछे हट कर जगल की तरफ भाग। एक दिन बाद बटरी वापस बुला ली गई और तातारस्की के कज्जाक फिर अपनी अपनी जगह आ डटे। कम्पनी की तोपो के गोलों से थोडी बरबादी हुई। हाल की कुमुक के दो जवान गोलों के टुकडो स मारे गए और कम्पनी के कमाडर का अरदली जख्मी हो गया। वह अभी अभी थोडे समय पहल व्योशेन्स्काया से आया था।

उसके बाद अपेक्षाकृत शांति-सी हो गई, और खाइयों की जिन्दगी

बदस्तूर चलने लगी। अब कज्जाकों की औरतें अक्सर ही रात को खाइयों में आने और रोटी और घर की बनी वोदका अपने साथ लाने लगीं। वैसे खाने पीने की यहां कोई तकलीफ न थी। कज्जाकों ने दो छुटटे बछड़ों को मार डाला था। इस पर भी वे हर दिन तालाब पर जाकर मछलियां फँसा लाते थे। ख्रिस्तानिया मछली महकमे का मुखिया माना जाता था। किसी शरणार्थी का सत्तर फुट लम्बा जाल उसके हाथ लग गया था और मछली के शिकार के समय वह इसे ताल के गहरे-से गहरे हिस्से में डाल देता था। साथ ही बड़ी डींगें मारता था कि नदी-किनारे की सारी चरागाहों में एक भी ताल ऐसा नहीं है जिसे वह पानी में हिलकर पार न कर सके।

मगर एक हफ्ते की लगातार मछलीमारी से ख्रिस्तोनिया की कमीज और 'शारोवारी' कीचड़ से इस तरह चीक्ट होकर बदबू करने लगी कि अनीकुश्का ने खाई में उसके साथ लेटने से साफ साफ इन्कार कर दिया। बोला—"तुम्हारे बदन से मीठे पानी की मरी हुई, बड़ी मछली की तरह बदबू आती है। अगर मैं तुम्हारे साथ एक दिन और रहा तो किसी मछली को हाथ न लगा पाऊँगा।"

और, फिर, मच्छरों के बावजूद अनीकुश्का खुले में सोने लगा। तो अब खाई की बगल में लेटने से पहले वह जमीन से मछलियों की खाल और अंतड़ियों से भरी रेत साफ करता और परेशानी से नाक भौं सिकोड़ता। लेकिन, सवेरे ख्रिस्तोनिया मछली के शिकार से लौटता, शांत भाव से, मर्यादा के साथ खाई के दरवाजे के पास बैठता और फिर, शिकार की काप मछलियों को साफकर उनकी अंतड़ियाँ निकालने लगता। बड़ी मक्खियाँ उसके सिर के ऊपर मँडराती और पीली चीटियों के दल के-दल धावा सा बोलते। अनीकुश्का हाँफते हुए दौड़ता और दूर से ही चीखता—"तुम्हें कोई दूसरी जगह नहीं मिलती? काश कि तुम्हारी मछलियों की ये हड्डियाँ तुम्हारे गले में जा फँसें! दूर चले जाओ ईसा के नाम पर यहाँ से दूर चले जाओ। यहाँ मैं सोता हूँ और तुम हो कि यहीं चारों तरफ मछलियों की अंतड़ियाँ फैला रहे हो! चीटियों की एक पूरी फौज की फौज अपने साथ ले आये हो, और ऐसा कर दिया

है कि जगह मस्त्राखान की तरह बू करने लगी है।"

क्रिस्तानिया घर का बना अपना चाकू पतलून के पाँयचों म पोछता, अनीकुश्का के सफाचट नफरत स भरे चेहरे पर विचार भरी दृष्टि डालता और फिर शांत भाव से कहता—"अनीकुश्का, तुम मछलियों की महक सह नही पात। इसका मतलब यह है कि तुम्हारे पेट म कीड़े हैं। तुम खाली पेट थोड़ा सा लहसुन क्यों नही खा लिया करत ?'

इस पर अनीकुश्का थूकते और गालियाँ बकते हुए चला जाता।

इस तरह उनकी चोचें चलती रहतीं। यो पूरी कम्पनी खासे मल मिलाप से रहती। खान की चीजें बराबर भरी रहती और स्तोपान मस्ताखोव के अलावा बाकी सभी कज्जाक खुश नजर आते।

जहाँ तक स्तोपान का सवाल है, उसन शायद कज्जाका से सुन लिया या शायद उसके दिल ने ही उससे कह दिया कि अक्सीनिया, व्येन्स्काया जाकर ग्रिगोरी से मिलती रहती है। जो भी हो, वह अचानक ही कटु हो उठा अकारण ही ट्रूप कमाडर पर बरस गया और उसने पहरेदारी की ड्यूटी करने स साफ इनकार कर दिया।

अब वह सारा दिन काले अड वाले स्लेज कम्बल पर पडा आह भरता और घर की उगी तम्बाकू धुआधुआ फूकता रहता। फिर सहसा ही उसने सुना कि कम्पनी कमाण्डर अनीकुश्का को कारतूसा के लिए व्येन्स्काया भेज रहा है। इस पर दो दिन म पहली बार वह अपनी खाई से बाहर निकला तो जगने के कारण सूजी आँखा से पानी बहने लगा। उसने सहराते पेडा की चमचमाती पत्तियों और हवा के इशारे पर आगे आगे दौडते, सफेद अयाल वाले बादलों को अविश्वास से देखा और जगल की ममर ध्वनि सुनी तो उसकी आँखें चौंधियाने सी लगी। वह खाइयो के किनारे किनारे अनीकुश्का की खोज मे बढा।

अनीकुश्का मिला तो दूसरे कज्जाका क सामन उसने उससे बातें करना पसद न किया। वह उस एक किनारे ल गया और बोला—"व्येन्स्काया म अक्सीनिया को तलाशना और उससे मेरी तरफ से कहना कि वह फौरन ही आकर मुझस मिले। उसस कहना कि मेरे बालों जुएँ पड गई हैं और मेरी कमीजें और पतलून गदे हो गए हैं।

साथ ही उससे यह भी कहना " स्तीपान घबराहट से मूछों-ही मूछों मुस्कराते हुए एक क्षण को चुप रहा और फिर अपनी बात खत्म करते हुए बोला—'कह देना कि उससे मिलने के लिए मैं बहुत ही बेचैन हूँ मेरा दिल बहुत तड़प रहा है।"

अनीकुश्का न आधी रात को व्येशेन्स्काया पहुचकर अकसीनिया का ठिकाना खोज निकाला। वह ग्रिगोरी से हुई कहा सुनी के बाद अपनी चाची के यहा रहने लगी थी। अनीकुश्का ने स्तीपान के पैगाम का शब्द शब्द कह सुनाया और फिर बात म वजन लाने के लिए, अपनी तरफ से बोला—"स्तीपान ने कहा है अगर तुम न गई तो वह खुद यहाँ आयेगा।"

अकसीनिया ने पूरी बात सुनी और लौटने की तयारियाँ करने लगी। चाची ने आटा भिगोया और आटे के उठने पर केकें तैयार कर दी। दो घंटे बाद अकसीनिया, अनीकुश्का के साथ तातारस्की कम्पनी के पड़ाव की ओर रवाना हो गई।

स्तीपान ने अपने मन की उत्तेजना मन म ही रखते हुए अपनी पत्नी का अभिवादन किया। उसने अब पढने की कोशिश की तो उसे अकसीनिया का चेहरा कही हलका लगा। अब उसने बडी ही सावधानी से स्वास्थ्य सम्बन्धी पूछताछ की और ग्रिगोरी से मिलने या न मिलने की बात गलती से भी न उठाई। बातचीत के दौरान सिफ एक बार, आँखें नीची किये और मुह दूसरी ओर को मोडते हुए, उसन पूछा—'लेकिन, तुम उधर से व्येशेन्स्काया क्यो नही गई? तुमने तातारस्की के सामने से नदी पार क्यो नही की?'

अकसीनिया ने खुश्की से जवाब दिया—'अजनबियों के साथ नदी पार करने का मुझे मौका नही लगा और मेलेखोवा के यहाँ जाकर कुछ पूछना मैंने ठीक नही समझा।' और, बात मुह से निकलते ही औरत ने समझा कि मेरी बात का मतलब यह है कि मेलेखोव मेरे लिए अजनबी नहीं हैं, बल्कि अपने ही हैं। पर उसने चिन्ता नही की कि स्तीपान भी इन शब्दों का यही अथ लगायेगा या नही। शायद स्तीपान

ने ठीक ही समझा, क्योंकि क्षण भर को उसकी भौंहें काँप गईं और उसके चेहरे पर एक रंग आया और एक रंग गया।

स्तीपान ने प्रश्न भरी आँखें उठाईं। अक्सीनिया ने सवाल समझा और अन्दर की परेशानी और खीझ के कारण उसका चेहरा एकाएक लाल हो गया।

स्तीपान, पत्नी की परेशानी बचाने के लिए, यों बना जैसे कि उसने कुछ देखा ही न हो और बात बदल दी। काम की चर्चा की। पूछा—'घर को छोड़कर आते वक्त कौन कौन सी चीजें छिपाकर रखीं ? और कायदे से छिपा भी दीं या नहीं ?"

अक्सीनिया ने अपने पति की उदारता अन्दर ही अन्दर सराही और उसके सवालों के जवाब दिये। पर उसके मन में एक काँटा सा बराबर चुभता रहा। सो उसने अपने अन्तर की उथल पुथल पर पर्दा डालना और अपने पति को इस बात का विश्वास दिलाना चाहा कि जो कुछ हुआ, वह यों ही है, उसकी ऐसी कोई अहमियत नहीं है। इसके लिए उसने जो कुछ कहा वह जान-बूझकर व्यवस्थित ढंग से, धीरे धीरे, तोल-तोलकर कहा।

इस तरह दोनों खाई में बैठे बातें करते रहे। पर कज्जाक उनकी बातचीत में रह रहकर बाधा डालते रहे। पहले एक आदमी अन्दर आया और फिर दूसरा। क्रिस्तोनिया आया तो फौरन ही सोने की तैयारी करने लगा। स्तीपान ने अकेले में बातें करने का मौका न पाया तो न चाहते हुए भी बातचीत थोड़े में ही खत्म कर दी।

अक्सीनिया के मन से बोझ उतरा। वह खुश खुश उठी, पुलिंदा खोला, केक से पति की गोद भर दी और उसके फौजी बंडल से गंदे कपड़े निकाले और पास के दलदली ताल पर धोने को चल दी।

दहर के सन्नाटे में रुपहला भूरी धुन्ध की एक चादर सा जंगल के ऊपर तनी रहा। घास की पत्तियाँ, ओस की बूँदों के बोझ से जमीन पर झुक झुक गईं। दलदल में मेढक अपनी बेसुरी टर-टर छेड़े रहे। खाई के पास मेपिल की घनी झाड़ी के पीछे कहीं कोई रेल चिड़िया कर्कश ध्वनि करती।

अकसीनिया भाडी की बगल से गुज़री। भाडी के सिरे से तने तक, नीचे की घास फूस के अन्दर, मकडी के जाले एक दूसरे मे उलझे रहे। उनके तार ओस की झलाझल बूदो से सजे रहे और ये बूदें पानीदार मोतियो की तरह चमचमाती रही। रेल चिडिया कुछ क्षणा को चुप रही और अकसीनिया के पैरो के नीचे दबी घास की पत्तियो के सीधा होने के पहले पहले फिर ज़ोर से बोलने लगा। दूसरी ओर दलदल के पार उडती टिटहरी जवाब मे अपने स्वरा मे उदासी घोलने लगी।

अकसीनिया ने हिलने डुलने की आसानी के लिए अपना ब्लाउज और चोली उतारकर एक ओर का फेंक दी, ताल के भाप उगलने, गम पानी म, घुटना घुटनो तक हिली और कपडे धोने लगी। उसके सिर के ऊपर छोट मोट कीडा क दलो से घिरे मच्छर भनभनाने लगे। उन्हे हटाने के लिए उसने भरा हुआ सावला हाथ चेहरे पर फेरा।

इस समय उसे ग्रिगोरी और ग्रिगोरी से हुई कहा सुनी का खयाल रह रहकर आने लगा।

वह तो कभी से मेरी तलाश कर रहा होगा। मैं आज ही रात को व्येशेन्स्काया लौट जाऊँगी। उसने दृढता से निश्चय किया और उसके होंठो पर मुस्कान दौड गई कि मैं फिर ग्रिगोरी से मिलूगी और हमारे बीच समझौता हो जाएगा।

सारा कुछ विचित्र रहा। इधर अकसीनिया ने जब भी ग्रिगोरी की कल्पना की, एक ऐसा नक्शा खींचा, जो उसका होकर भी सचमुच उसका न रहा। आज का ग्रिगोरी शक्ति और कोप का अवतार कज्ज़ाक उसकी आँखो के सामने कभी आया ही नहीं। इस आदमी ने तो जाने कितना-कुछ देखा सुना और सहा था। इसकी आँखो म थकान थी, काली मूछो की नोकों पर जग सी थी, कनपटियो पर उम्र के पहले ही सफेदी दौड गई थी और माथे पर गहरी लकीरें थी। यह सारा कुछ इतने इतने वर्षो की लडाई के कठिन जीवन के अमिट निशानों का लेखा था।

अकसीनिया के मानसपटल पर तो सदा ही उभरा पुराना, गुरू का ग्रीशा मेलेखोव—जवानी से भरा, अपने प्यार दुलारा म भी अल्हड और भद्दा—पतली, गोल गर्दन—होंठों पर अपिफ्री से थिरकती सभ्यहार

मुस्कान! यही नही इन विशेषताओ के कारण ही उसे उस पर ज्यादा स-ज्यादा प्यार आया और उसने उसके प्रति माता-सुलभ स्नेह और कोमलता का भी अनुभव किया।

और इसीलिए इस समय भी ग्रिगोरी की एक एक विशेषता स्पष्टतम रूप म जो अकसीनिया के सामने आई और उसे बेहद वेशकीमती लगी तो वह बुरी तरह हाँफने लगी। उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। वह तनी। उसे अपने गले म कुछ अटकता सा लगा। प्यार के आँसू पलको से ढुलक चले। उसने अपने पति की आधी धुली कमीज नीचे पटककर पैरों से रौंदी और फुसफुसाती हुई बोली—"बुरा हो तेरा, तू तो हमेशा हमेशा के लिए मेरे दिल म समा गया है ग्रीश्का।"

आँसुओ स दिल हलका हुआ, पर बाद म उसके चारो ओर की सवेरे की पीली नीली दुनिया सहसा ही रगो म बुझने लगी। उसने अपने हाथ के पिछले हिस्से से गाल पोछे। अपनी गीली भौंहो से बाल पीछे झटके और बहुत देर तक विचार शून्य सी एक जलमुर्गी को देखती रही। जलमुर्गी पानी पर फिसली और फिर हवा म उमडती धुध की गुलाबी कसीदेकारी के बीच खो गई।

अकसीनिया ने कपडे धोये, उन्हें झाडियो पर फैलाया और खाई को लौट दी।

क्रिस्तोनिया सोकर उठ गया खाई के प्रवेश के पास बैठा अपने गाँठ गँठीले अगूठे ऐंठ रहा था और स्तीपान को छेड़ छेडकर उससे जबरदस्ती बातें करने की कोशिश कर रहा था। स्तीपान कम्बल पर लेटा चुपचाप धुआँ उडा रहा था और क्रिस्तोनिया क सवालो के जवाब देने से बच रहा था। आखिरकार क्रिस्तोनिया बोला—

तो, तुम्हारा खयाल है कि लाल फौजी नदी पारकर इस तरफ नही आयेंगे? जवाब क्यो नही देते? खर, नहीं देना चाहते जवाब, तो न दो। लेकिन, मेरा अपना तो खयाल यह है कि वे कटाव की तरफ से नदी पार करेंगे वहाँ स नदी पार की जा सकती है, और कहीं से पार करना उनके बस की बात नहीं है शायद तुम सोच रहे हो कि व अपने घुडसवार नदी के पानी मे हिला देंगे क्यों?

बोलते क्यों नहीं, स्तीपान ? ऐसा लगता है कि आखिरी मोर्चा यही बंधेगा। और तुम हो कि लक्कड़ के कुंदे की तरह पसरे पड़े हो।"

स्तीपान आधा उठकर बैठ गया और गुस्से से भरकर बोला—'तुम मेरी जान के पीछे क्या पड़े हुए हो ? तुम सब, अजीब मजाकिया लोग यहाँ जमा हो। यानी मेरी बीवी मुझसे मिलने आई हो और तुम हो कि मुझे बात नहीं करने देते। यानी तुम दुनिया की बकवास करते चले जाते हो और मुझे अपनी बीवी से दो बातें नहीं करने देते।'

"अच्छा है तुमने मुंह खोलकर अपने दिल की बात तो कही।" ख्रिस्तोनिया बिगड़कर उठा, नंगे पैरों पर सैंडिल चढ़ाये और दरवाज़े के सिर से अपना सिर टकराता बाहर चला गया।

'यहाँ तो इन लोगों के मारे हम बातें करने का मौका मिलने से रहा। आओ जंगल में चलें।" स्तीपान अक्सीनिया से बोला और उसके जवाब का इन्तजार किये बिना दरवाज़े की ओर बढ़ चला। अक्सीनिया आजिज़ी से पीछे पीछे चल दी।

दोनों दोपहर को खाई में वापस आये। आल्डार की झाड़ी की ठंडी छाँव में लेटे, दूसरे ट्रूप के कज़ाकों ने अक्सीनिया और स्तीपान को देखा तो ताश के पत्ते एक तरफ को रख दिए और एक-दूसरे को देख देखकर आँखें मारते, हँसते और ज़ोर ज़ोर से आहें भरने लगे।

अक्सीनिया अपना गाजा हुआ लेसवाला सफेद रूमाल कसती और नफरत से होंठ बिचकाती इन फौजियों के पास से गुजर गई। किसी ने उससे कुछ नहीं कहा। लेकिन स्तीपान उसके पीछे-पीछे इनके पास पहुंच भी न पाया कि अनीकुश्का उठा टोली से बाहर आया बनावटी ढंग से आदर दिखलाते हुए स्तीपान के सामने झुका और ज़ोर से बोला, 'एक के लिए मुबारकबाद, अब तो रोज़ा टूट गया न ?'

स्तीपान सहज भाव से मुस्कराया। उसे खुशी हुई कि कज़ाकों ने उसे उसकी बीवी के साथ जंगल से लौटते देख लिया। मन ही मन सोचा अच्छा हुआ। अब यह अफवाह तो कम होगी कि मेरी अक्सीनिया से बनती नहीं।

उसने तो ग्रेगोरी को दिखलाने के लिए अपने घर तक भटके और

सतोष की सांस लेते हुए पीठ पीछे कर दी। कमीज का पिछला हिस्सा अब तक पसीने से तर दीखा।

इस तरह स्तीपान के व्यवहार मे मजाक को बढ़ावा मिला और वे हँसने और तरह तरह की आवाज़कशी करने लगे।

'लेकिन औरत गर्म है प्यारो ! स्तीपान की कमीज आसानी से उतरेगी नहीं, पसीने से ऐसी तर है कि कंधों से चिपक गई है।

'औरत ने सारी खाई पी निकाल ली है—हर जगह से पसीने पसीने हो रहा है मुंह से झाग छूट गया है।'

एक जवान की खुशी से भरी निगाह खाई तक अक्सीनिया का पीछा करती रही। बाद में वह बड़ी हसरत से बोला— दुनिया भर में ढूंढ़ आओ कहीं ऐसी हसीन औरत मिलेगी नहीं नीली छतरीवाला मुझे अक्सीनिया ! माफ करे।

इस पर अनीकुश्का ने तर्क सामने रखा—'ऐसा क्यो कहते हो ? तुमने खोजने की कोशिश की है कभी ?'

अक्सीनिया ने ये सारी उल्टी सीधी बातें सुनी तो उसके चेहरे का रंग थोड़ा उड़ गया। खाई में घुसी तो अपने पति और अपने बीच की ठंडक की घनिष्ठता और उसके साथियो की लुच्चपन से भरी बातों के ख्याल से उसकी भौंहें तन गई और उसका अन्तर घृणा से भर उठा। स्तीपान ने दूसरे ही क्षण पूरी बात भांपी और मनौती करते हुए बोला—"ये आदमी नहीं स्टेलियन घोड़े हैं। इनकी बातो पर नाराज न हो और बात यह है कि ये खुद औरतों के लिए तरस रहे हैं।'

'मेरा ऐसा कोई नहीं जिससे मैं नाराज हो सकूं।" उसने अपने थैले में हाथ डालते हुए, बुझे हुए दिल से कहा और पति के लिए लाई गई सारी चीजें जल्दी जल्दी निकालकर सामने रख दी। फिर, और सधे हुए स्वर में बोली— मुझे नाराज तो सिर्फ अपने आपसे होना चाहिये, लेकिन इसके लिए कलेजा मेरे पास नहीं है ।'

फिर कुछ ऐसा हुआ कि उन दोनों के सामने बातचीत करने के लिए जैसे कुछ बचा ही नहीं। कोई दस मिनट बाद अक्सीनिया उठ खड़ी हुई।

'मैं इससे कह दूंगी कि मैं व्येशेंस्काया लौट जाऊंगी।' उसने सोचा, लेकिन इसी समय उसे खयाल आया कि सूखे कपड़े तो वह उठा-कर लाई ही नहीं।

फिर वह खाई के दरवाजे के पास बैठी अपने पति की पसीने से सड़ी कमीजें और पतलून ठीक करती रही। इस बीच रह रहकर उसने आँखें उठाईं और क्षितिज की ओर जाते सूरज पर निगाह डाली।

इसके बावजूद उस दिन वह वहां से कहीं नहीं गई। उसका हियाव ही न हुआ। लेकिन, अगले दिन सवेरे सूरज उग भी नहीं पाया कि उसने तयारी शुरू कर दी। स्तीपान ने उसे बहुत रोका, ज्यादा नहीं तो एक दिन और रुकने की मिन्नत की। लेकिन, अकसीनिया ने इतनी दृढ़ता से नहीं की कि आगे उसने कुछ नहीं कहा। सिर्फ चलते वक्त बोला, "तुम्हारा इरादा क्या व्येशेंस्काया में रहने का है?"

'हां, फिलहाल तो है।'

'तुम यहां मेरे पास नहीं रह सकतीं?"

'यहां कज्जाकों के साथ रहना, मेरे लिए अक्ल की बात नहीं है।'

'शायद तुम ठीक कहती हो।" स्तीपान ने पत्नी की बात का समर्थन किया, लेकिन उसने पत्नी को विदाई बहुत ही भावहीन ढंग से दी।

हवा दक्षिण पूर्वी थी। दूर से आई थी और रात में थक सी गई थी। पर सवेरा होने का समय होते होते वह फिर ट्रांस-कास्पियन रेगिस्तान की उमस और गरमी दोन के इलाके में ला लाकर उडेलने लगी और बायें किनारे की पानी से भरी चरागाहों के टुकड़ों पर टूट-टूट पड़ने लगी। उसने ओस सोख ली, धुंध उड़ा दी और दोन-क्षेत्र की पहाड़ियों की खड़ियावाली चोटियों को गुलाबी कुहरे से मढ़ दिया।

जंगल में अब भी ओस थी। इसलिए अकसीनिया ने सैंडल उतार लिए, अपनी स्कर्ट का सिरा बायें हाथ से पकड़ लिया और जंगल की एक सूनी सड़क के किनारे किनारे धीरे धीरे चल दी। उसके पैर गीली धरती पर पड़ते तो बड़ी उसे बहुत ही अच्छी लगी। दूसरी ओर, सुरम हवा उसकी मोटी, नंगी पिंडलियों और गर्दन को रह रहकर चूमती रही।

अक्सीनिया खुले मैदान में इग्लैण्टाइन फूलों से भरी झाड़ी के पास बैठ गई और आराम करने लगी। कहीं पास ही आधे सूखे ताल के सरपतों के बीच बत्तखें सरसराने लगी और एक नर बत्तख ने भर्राये गले से अपनी मादा को आवाज दी। दोन के पार मशीनगनें धीरे धीरे मगर बराबर खड़खड़ाती रहीं। बीच बीच में तोपें भी गरजती रहीं और गोलों के धड़ाकों की गूंज इस पार सुनाई पड़ती रही।

इसके बाद गोलाबारी का तार बीच बीच में टूट भी गया और धरती की सारी छिपी हुई आवाजें अक्सीनिया के कानों में एक साथ बजने लगीं। (अखरोट के किस्म के) एश पेड़ की सफेद किनारियों वाली हरी पत्तियां और शाहबलूत के फफूंदी लगे नक्काशीदार पत्ते हवा में जोर जोर से खड़खड़ाते रहे। ऐस्प के नये पेड़ों के झुरमुट से स्थिर गति से सरसराहट होती रही। दूर, बहुत दूर कोई उल्लू किसी की जिन्दगी के बचे-खुचे सालों की गिनती बहुत हल्के हल्के करता रहा। ताल के ऊपर से उड़ती एक टिटहरी 'पीविट पीविट' करती रही। अक्सीनिया से दो कदम के फासले पर कोई भूरी चिड़िया अपनी गर्दन जरा जरा पीछे की ओर झटकते और खुशी से पलकें झपकाते हुए, सड़क के छोटे गढ़े में पानी पीती रही। मखमली गर्द से नहाई बड़ी मक्खियाँ भनभनाती रहीं। सांवली जंगली तितलियाँ चरागाही फूलों की पंखुड़ियों से रह रहकर टकराती और मधुमय पराग चुरा चुराकर उड़ती रहीं। दवगारों की शाखों से रस टपकता रहा और हाथन झाड़ों के नीचे से पत्तियों की सड़ायंध आती रही।

अक्सीनिया स्थिर बैठी जंगल की तरह-तरह की महकों से अपनी साँसें साधती रही। जंगल का स्वाभाविक सहज जीवन, अनगिनत सुरीले स्वरों से मुखर होता रहा। वसन्त के पानी की बाढ़ से सीभी चरागाह की मिट्टी में तरह-तरह की घासों की पत्तियाँ उगती रहीं। सो फूलों और जड़ी बूटियों के इस मायाजाल को देखकर अक्सीनिया का मुंह अचरज से खुला का खुला रह गया।

उसने मुस्कराते और बिना आवाज के होंठ चलाते हुए अनाम पीले, नीले, छोटे छोटे फूलों के डंठलों को सावधानी से छुआ और फिर उन्हें

सूंघने के लिए अपनी कमर लचकाई। सहसा ही घाटी के लिली फूलों की उन्माद से भरी महक उसके नथुनों में आ भरी। उसने हाथ से टटोलते हुए पौधा खोज लिया। पौधा उसकी बगल में, दाईं ओर एक अभेद्य छायादार झाड़ी के नीचे उगा नजर आया। कभी की हरी, चौड़ी पत्तियाँ झुके हुए, बर्फ से सफेद फूलों के मधु पात्रों से लदे नीचे के डंठलों को इस समय भी सूरज से बचाती दीखीं। पर, ऊपर, ओस और पीली जंग के पर्दे में वे खुद अंतिम साँस लेती रहीं और मौन फूलों को रह रहकर अपनी टूटी उँगलियों से छूती रहीं। एक जगह नीचे के दो फूलों के चेहरे झुर्रियों से भरे और सकुचाए समझ पड़े। सिर्फ ऊपर का एक फूल ओस के झलाझल आँसुओं से नहाया, सहसा ही धूप में कौंधा। उसके रुपहरी रंग ने ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

अक्सीनिया भरी आँखों से इस समय इन फूलों को देखती और इनकी उदासी से भरी महक का सुख लेती रही कि पता नहीं क्यों उसकी जवानी और पूरी जिंदगी आँखों के आगे साकार हो उठी। इतनी लम्बी जिन्दगी सुख के क्षणों की गिनती की दृष्टि से बहुत ही छोटी लगी। मन ने कहा—"अब तू शायद बूढ़ी हो रही है भला कोई जवान औरत भी कभी ठिठककर आँसू सहेजती है क्योंकि उसे कोई भूली बिसरी याद सी आकर रह जाती है!"

उसने आँसुओं से नहाया चेहरा हाथों से छिपा लिया और गीले गाल पर रूमाल रख लिया। फिर रोते रोते सो गई।

हवा और तेज हो गई और देवदार और बेंतों के सिरों को पश्चिम की ओर झुकाने लगी। एस्प वृक्ष का पीला तना उड़ती हुई पत्तियों के कपूरी अंधड़ में लिपटा, हवा में लहराने लगा। अक्सीनिया जिसके नीचे सोती रही, उस फूलों से भरी इग्लटाइन की झाड़ी पर हवा उतरी। हरी, जादुई चिड़ियों के चौंके हुए दल की तरह पत्तियाँ उत्सुकता से सरसरातीं और गुलाबी परों सी पखुड़ियाँ को हवा के झोंकों को सौंपने लगा। अक्सीनिया पर इग्लटाइन की ये मुरझाई हुई पखुड़ियाँ बरसतीं रहीं और वह इस तरह सोती रही कि न तो जंगल के मुखर स्वर उसके कानों में पड़े, न दोन पार गोलाबारी

के फिर से शुरू होने का एहसास हुआ और न नगे सिर पर सीधी पड़ती सूरज की किरणों की गरमी ही अनुभव हुई। वह जगी तो तब जगी जब किसी आदमी की आवाज और घोड़े की हिनहिनाहट उसके कानों में पड़ी। फिर तो हड़बड़ाकर उठकर बैठ गई।

उसने देखा बगल में खड़ा एक जवान कज्जाक—मूछें सफेद दांत मोती की तरह उजले कसे हुए सफेद नाक वाले घोड़े की लगाम हाथ में। कज्जाक खुलकर मुस्कराता कधे झटकता, पर पटकता और भर्राये गले, मगर प्यारे ढग से एक गीत गाता रहा—

धरती पर ढही रही,
मनखी से देखा—
कभी उधर और कभी इधर का—
कोई नहीं ऐसा जो हाथ मुझे दे दे
किस्मत में बदा एक ऐसा भी दिन था—
लेकिन फिर मैंने जो देखा पलटकर—
पास खड़ा पाया कज्जाक एक सुन्दर।

'मुझे मदद की जरूरत नहीं मैं यो भी उठ सकती हूँ।' अक्सीनिया मुस्कराई और भीगी हुई स्कर्ट ठीक करती हुई फुर्ती से उछलकर खड़ी हो गई।

'कहो मेरी रानी बात क्या है? पैरो ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया या यो ही आलस आ गया?'—खुशी से खिले कज्जाक ने उसका अभिवादन किया।

'यो ही नीद आ गई।' अक्सीनिया ने शर्म से लाल होते हुए जवाब दिया।

'ल्येनिस्काया जा रही हो?

हाँ।'

'मैं तुम्हे अपने साथ ले चलूँ वहाँ?'

लेकिन किस पर?'

तुम घोड़े पर सवार हो जाओ। मैं पैदल ही चला चलूँगा। यह भी मुझ पर मेहरबानी होगी तुम्हारी 'जवान कज्जाक ने आँख मारी।

"नहीं, तुम जाओ ईश्वर तुम्हारी मदद करे मैं या हो पैरों-परा अपनी मंजिल तय कर लूंगी।"

लेकिन, कज्जाक इश्क और जिद के मामने म खिलाडी साबित हुआ। अकसीनिया अपने सिर के रूमाल को ठीक करने म उलझी तो उसने इस क्षण म फायदा उठाया। उस छोटे पर मजबूत हाथ से कसकर सीने से लगा लिया और चूमने की कोशिश की।

'बेवकूफी न करो!" अक्सीनिया चीखी और उसकी नाक की नोक पर कुहनी मारी।

"मेरी रानी, बेकार परेशान न हो। देखो, आस पास की दुनिया कितनी प्यारी कितनी हसीन है हर एक अपने जोडे की तलाश म है ऐसे मे हम लोग ही अपने हिस्से के गुनाह से क्यो परहेज करें और क्यों बचें और कज्जाक अपनी खुशी से चमकती आखें मिचकाते और अकसीनिया की गरदन को अपनी मूछ्रा स सहलाते हुए धीरे से बोला।

अक्सीनिया का गुस्सा जसे उतार पर आ गया। पर, उसने अपने हाथ छुडाये और कज्जाक के भूरे पसीने से तर चेहरे का पीछे ठेलते हुए अपने को आजाद करने की कोशिश की। मगर सख्त पकड ने जुम्बिश नहीं खाई।

"गधे हो तुम! तुम्हे पता है मुझे बहुत ही गन्दी बीमारी है छोड दो मुझे।' अक्सीनिया न हाँफते हुए मिन्नत की और सोचा कि इस मामूली सी चालाकी से इस पाप से मेरी जान बच जाएगी।

'उफ लेकिन सवाल यह है कि बीमारी कितनी पुरानी है!" कज्जाक ने दांत भींचे ही भीचे कहा और सहसा ही उसे गोद म उठा लिया।

अकसीनिया को अचानक ही लगा कि मजाक खत्म हो गया और अब तो मामला गम्भीर शक्ल ले चला। सो, उसन कज्जाक की भूरी धूप मे सँवराई नाक पर भरपूर घूसा जमाया और अपने को जकडने वाल हाथो को झटककर दूर कर दिया। बोली—"मैं ग्रिगोरी मलेखोव की बीवी हूँ। तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम बदनीयती से मेरे पास फटक भी जाओ! कुतिया के बच्चे कहीं के! मैं उससे सारा कुछ

के फिर से शुरू होने का एहसास हुआ और न नगे सिर पर सीधी पडती सूरज की किरणो की गरमी ही अनुभव हुई। वह जगी तो तब जगी जब किसी आदमी की आवाज और घोडे की हिनहिनाहट उसके कानो म पडी। फिर तो हडबडाकर उठकर बठ गई।

उसने देखा बगल म खडा एक जवान कज्जाक—मूछें सफेद दाँत मोती की तरह उजले कसे हुए, सफेद नाक वाले घोडे की लगाम हाथ म। कज्जाक खुलकर मुस्कराता कधे झटकता पैर पटकता और भर्राये गले, मगर प्यारे ढग स एक गीत गाता रहा—

घरती पर ढही रही,
बनमी स देखा—
कभी उधर और कभी इधर को—
कोई नही एसा जो हाथ मुझे दे दे
किस्मत मे बदा एक ऐसा भी दिन था—
लेकिन फिर मैंने जो देखा पलटकर—
पास खडा पाया कज्जाक एक सुन्दर!

'मुझे मदद की जरूरत नहीं, मैं यो भी उठ सकती हूँ।' अक्सीनिया मुस्कराई और भीगी हुई स्कट ठीक करती हुई फुर्ती स उछलकर खडी हो गई।

'कहो मेरी रानी बात क्या है? परो ने आगे बढने से इनकार कर दिया या यो ही आलस आ गया? —खुशी से खिले कज्जाक ने उसका अभिवादन किया।

यो ही नीद आ गई।' अक्सीनिया ने शम स लाल होते हुए जवाब दिया।

व्येशेन्स्काया जा रही हो?

हाँ।'

मैं तुम्हे अपने साथ ले चलूँ वहाँ?"

लेकिन किस पर?

'तुम घोडे पर सवार हो जाओ। मैं प दल ही चला चलूगा। यह भी मुझ पर मेहरबानी होगी तुम्हारी "जवान कज्जाक न आँख मारी।

"नहीं तुम जाओ ईश्वर तुम्हारी मदद करे मैं यों ही पैरों-पैरों अपनी मंजिल तय कर लूंगी।"

लेकिन, कज्ज़ाक इश्क और ज़िद के मामले में खिलाड़ी साबित हुआ। अक्सीनिया अपने सिर के रूमाल को ठीक करने में उलझी तो उसने इस क्षण से फायदा उठाया। उसे झटके पर मजबूत हाथ से कसकर सीने से लगा लिया और चूमने की कोशिश की।

"बेवकूफी न करो!" अक्सीनिया चीखी और उसकी नाक की नोक पर कुहनी मारा।

"मेरी रानी, बेकार परेशान न हो। देखो, आस पास की दुनिया कितनी प्यारी कितनी हसीन है हर एक अपने जोड़े की तलाश में है। ऐसे में हम लोग ही अपने हिस्से के गुनाह से क्यों परहेज करें और क्यों बचें और कज्ज़ाक अपनी खुशी से चमकती आँखें सिकोड़ता और अक्सीनिया की गर्दन को अपनी मूछों से सहलाते हुए धीरे से बोला।

अक्सीनिया का गुस्सा जैसे उतार पर आ गया। पर, उसने अपने हाथ छुड़ाये और कज्ज़ाक के भूरे पसीने से तर चेहरे को पीछे ठेलते हुए अपने को आज़ाद करने की कोशिश की। मगर सख्त पकड़ न जुम्बिश नहीं खाई।

गधे हो तुम! तुम्हें पता है, मुझे बहुत ही गन्दी बीमारी है। छोड़ दो मुझे। अक्सीनिया ने हाँफते हुए मिन्नत की और आशा कि इस मामूली सी चालाकी से इस पाप से मेरी जान बच जाएगी।

'उफ़ लेकिन सवाल यह है कि बीमारी कितनी पुरानी है!" कज्ज़ाक ने दांत भींचे ही भींचे कहा और सहसा उसे उस गाड़ी में उठा लिया।

अक्सीनिया को अचानक ही लगा कि मज़ाक गरम हो गया और अब तो मामला गम्भीर शक्ल ले चला। सो, उसने कज्ज़ाक की भूरी धूप में सँवराई नाक पर भरपूर घूसा जमाया और अपने को जकड़ने वाले हाथों को झटककर दूर कर दिया। बोली— मैं ग्रिगोरी मेलेखोव की बीवी हूँ। तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम कम्नीयती से मेरे पास फटक भी जाओ! कुतिया के बच्चे कहीं के! मैं उसस सारा कुछ

ला दूगी और वह तुम्हारी हड्डी पसली '

पर उस लगा कि उसकी बातो का कज्जाक पर असर कुछ न होगा। इसलिए उसने लपककर एक मोटी सी सूखी लकडी उठा ली। लेकिन कज्जाक का सारा जोश देखते देखते ठण्डा पड गया। उसने नाक पर बहकर गलमुच्छो पर आते खून को अपनी खाकी कमीज की आस्तीन से पोछा और दर्द से तडपते हुए बोला— बेवकूफ कही की! बिलकुल बेअक्ल औरत हो तुम! तुमने यह बात पहले ही क्यो नही कही? देख, देखो तो कैसा खून बह रहा है! दुश्मनो ने जैसे कुछ रियायत कर दी है कि अब खुद कज्जाक औरतें हमारा खून बहाने पर उतर आई हैं। '

कज्जाक का चेहरा एकाएक पीला पड गया और सारी मोहब्बत खत्म हो गई। वह सडक किनारे के एक गढे मे पानी ले लेकर खून साफ करने लगा कि अक्सीनिया तेजी से मुडी और हवा की तरह मकान पार करने लगी। कोई पाँच मिनट के अन्दर अन्दर कज्जाक बराबर से आ गया। फिर औरत को कनखी से देखता, चुप चुप मुस्कराता, अपनी राइफल के सीने पर पडे फीते को कायदे से ठीक करता और अपने घोडे की दुलकी चाल से दौडाता आगे निकल गया।

२

उस रात लाल फौज ने लकडी के तख्तो और कुण्डों के बेडो पर दोन नदी पार की, और वे एक छोटी झोपडी के पास आ निकले।

झोपडी के कज्जाको पर अनायास ही बिजली सी टूट पडी क्योकि उनमे से अधिकाश रगरेलियाँ मना रहे थे। तीसरे पहर से ही उनकी बीवियाँ आती और अपने साथ घडे घडे और बाल्टी बाल्टी भर घर की बनी वोद्का लाती रही थीं। आधी रात होते होते वे अपने आप मे न रह गए थे, मानो नशे मे धुत औरतों की चीख पुकारो और मर्दों के हँसी के ठहाको और सीटियो की आवाजें खाइयो मे आ रही थी। पहरे की ड्यूटी पर तैनात बीस कज्जाको ने भी इस नाचगानो मे हिस्सा लिया था। सिर्फ दो तोपची और एक बाल्टी वोद्का मशीनगन के पास छोड दी थी।

लाल फौज के बडे, सन्नाटे से भरे, दोन के दाहिने किनारे से

चले। लाल फौजी सामन के किनारे पर उतरे और एक एक दो-दो के क्रम में खाइयों की ओर बढ़े। खाइयां नदी से कोई दो सौ कदमों के फासले पर थीं।

बेड़े बनाने वाले फौजी इंजीनियर लाल फौजियों की दूसरी टोली को लाने के लिए अपने बेड़ों पर तेज़ी से वापस लौट गए।

बायें किनारे पर गार के भुटपुट स्वरों के अलावा पाँच मिनट तक कोई आवाज़ नहीं सुनाई न पड़ी। इसके बाद हथबम फटने लगे, मशीनगन खड़खड़ाने लगी, राइफलों से गोलियाँ बरसने लगीं और रात के सन्नाटे में दूर-दूर तक हुर्रा हुर्रा का शोर गूंजन लगा।

टुकड़ी बौखला उठी और उसके पूरे-के पूरे लोग बरबादी से सिर्फ इसलिए बचे कि घटाटोप अंधकार में लोगों का पीछा नहीं किया जा सका।

कज्ज़ाकों का कोई बहुत नुकसान न हुआ, उनके बीच खलबली मच गई और वे अपनी अपनी औरतों को लिए दिये, चरागाहें पार कर उल्टे सीधे व्यान्स्काया की ओर भागे। पर, इस बीच बड़े लाल फौजियों की नई टुकड़ियाँ ले आये और १११वीं रेजीमेंट की पहली बटेलियन की आधी कम्पनी ने हलकी मशीनगनों से लैस होकर, बाजकी के किनारे से बागी स्क्वड्रन को भूनना लगी।

इस तरह जो दरार बनी उसे पाटने के लिए ताज़ा कुमुक लाई गई। लेकिन, इन फौजों की रफ्तार धीमी रही क्योंकि किसी भी लाल फौजी को जगह का पता न रहा। यूनिटों के पास गाइड नहीं रह और अंधेरे में अंधा की तरह भाग बढ़ते हुए उनके सदस्य नाला और बाढ़ के पानी की तेज़ धारों में रह रहकर भहराते और फंसते रहे। बाढ़ के पानी को काटा न जा सका।

हमले का निर्देशन करने वाले ब्रिगेड कमांडर ने लोगों को खदेड़ने का सवाल तड़के तक के लिए उठा रखा। इस बीच रिज़र्व फौजें ला-लाकर व्यान्स्काया के रास्तों पर जमाई गई और तोपों की तयारी का हुक्म दे दिया गया।

पर व्यान्स्काया में दरार को पाटने के लिए कदम तेज़ी से उठाये

जाते रहे। ज्योंही सन्देशवाहक लाल फौजियों के नदी पार करने की खबर लेकर अपना घोड़ा दौड़ाता आया, त्योंही स्टाफ हेडक्वाटर्स में कार्याधिकारी ने कुदिनोव और मलखोव को बुला भेजा। कारगिन्स्काया रेजीमेंट की टुकड़ियाँ चोर्नी गाराखोवका और दुब्रोवका से बुलाई गई। ग्रिगोरी मलखोव ने पूरी कारवाई की आम कमान सँभाल ली। उसने तीन सौ तलवारबन्द कज्जाक येरेन्स्की गाँव के सामने झोंक दिए ताकि बायाँ बाजू मजबूत हो सके और अगर दुश्मन पूब की ओर से व्येशेन्स्काया लेने की कोशिश करे तो तातारस्की और ल याजी के कज्जाक दुश्मन का धक्का भेलकर अपने पैर जमाये रह सकें। ग्रिगोरी ने व्येशेन्स्काया के विश्नी स्वयंसेवकों को पश्चिम की तरफ रवाना किया बाजकी स्क्वडन की मदद के लिए चिर प्रदेश की एक पैदल टुकड़ी भेजी आठ मशीनगनें खतरे के इलाके में जमवाइ और कोई दो बजे सवेरे घुड़सवार फौजियों की दो टुकड़ियाँ लेकर खुद जंगल के सिरे पर जा जमा और लाल फौजियों पर हमला बोलने के लिए सुबह का इन्तजार करने लगा।

दूसरी ओर व्येशेन्स्काया के स्वयंसेवकों की टुकड़ी ने जंगल में भाते हुए, दोन के बाजकी वाले किनारे तक की मंजिल तय कर डाली। पर सप्त ऋषि आसमान में चमकता ही रहा कि उसकी टक्कर बाजकी के पीछे हटते लोगों से हो गई। टुकड़ी के लोगों ने इन लोगों को गलती से दुश्मन समझा इसलिए कुछ देर तक इन पर आग बरसाई और फिर भाग खड़े हुए। व्येशेन्स्काया की चरागाह से अलगाने वाली बड़ी झील के पास पहुँचने पर इन्होंने हड़बड़ी में जूते कपड़े किनारे पटके और तर तैरकर उस पार पहुँचे। गलती जल्दी ही पकड़ गई। लेकिन लाल फौजियों के व्येशेन्स्काया पहुँचने की खबर हवा की रफ्तार से, बहुत पहले ही हर तरफ फैली मिली। नतीजा यह हुआ कि तहखानों में छिपे शरणार्थी गाँव छोड़-छोड़कर उत्तर की तरफ भागे और हर जगह यह अफवाह फैलाते गये कि लाल फौजियों ने दोन पार कर ली है मोर्चा तोड़ डाला है और व्येशेन्स्काया पर चढ़े चले आ रहे हैं।

ग्रिगोरी को स्वयंसेवकों के भागने की खबर मिल गई और

आसमान म दिन का उजाला छिटकना शुरू ही हुआ कि वह घोडा दौडाता दोन तक जा पहुचा। इस बीच स्वयसेवको न अपनी गलती समझी और जोर जोर से बातें करते हुए खाइयो की ओर लौटे। ग्रिगोरी उनके एक दल के पास पहुचा और व्यग्य करते हुए बोला—"झील तैरकर पार करने म बहुत लोग डूब गये क्या ?"

सिर से पैर तक पानी मे तर बतर एक राइफलमैन ने चलते चलते अपनी कमीज उतारी और स्वरों के उतार-चढाव के साथ जवाब दिया—"हम सब तो पाइक मछलियो की तरह तरे। डूबते आखिर क्यो ?"

"वैसे गलतियाँ हर आदमी करता है।" सिर्फ पैंट पहने एक दूसरा आदमी सूखो की भाषा मे बोला—"अब हमारे ग्रुप-कमाडर को ही लो। सचमुच डूबते डूबते बचा। बात यह हुई कि उसने पट्टियाँ खोलने मे खर्च होने वाले वक्त को बचाने के खयाल से जूते नही उतारे और पानी में हिल गया। तैरने लगा तो पट्टिया बीच म ही खुल गईं और पैरो म उलझने लगी। फिर तो किस तरह गला फाडकर चिल्लाया वह। कोई एक वर्स्ट दूर होता तो भी उसकी आवाज सुन लेता।"

ग्रिगोरी ने स्वयसेवकों की टुकडी के कमाडर को खोजा और उसे हुक्म देते हुए बोला—"इन लोगो को जगल के सिरे पर ले जाओ और इन्हे इस तरह रखो कि जरूरत पडने पर ये बाहर से लाल फौजियो की कतारो को घेर सकें।" इसके बाद उसने अपना घोडा मोडा और अपने स्क्वैड्रन की ओर बढा।

सडक पर उसे स्टाफ का एक अर्दली मिला। आदमी ने घोडे की रासें खीचीं और सन्तोष की सांस लेते हुए बोला—"मैं हलाकान हो गया आपको खोजते खोजते।" और घोडे के पुट्ठो और बाजुओ से देखने से लगा कि जानवर को ताबडतोड दौडाया गया है।

"क्यो ? बात क्या है ?"

"स्टाफ ने आपके पास खबर भेजी है कि तातारस्की कम्पनी के लोगो ने अपनी अपनी खाइयाँ छोड दी हैं और वे, घिर जाने के डर से, बलुहे मैदान की तरफ पीछे भाग रहे हैं। खुद कुदिनोव ने कहा है कि आप

फौरन ही वहाँ पहुँचें।"

ग्रिगोरी ने लाज़े म-लाज़े घोडा पर सवार, कज्जाकों के दूत के साथ जगत पारकर सडक का रास्ता लिया और कोई बीस मिनट की घुडदौड के बाद वह गोली इलमेन की भील के इलाके म पहुच गया। बाइ और तातारस्की के घबराये हुए लाग चरागाह म आरपार दौडते दीखे। इनम से मोर्चे के अनुभव वाले लोग या सयानी उम्र के दूसरे कज्जाक भील के पास ही पास रहने और नदी किनारे के झाड भाडियों की आड लेते इत्मीनान से चलते रह। लकिन बाकी म से ज्यादातर लोगो के मन म सिर्फ एक इच्छा पलती रही कि जैसे भी हो जल्दी म जल्दी जगल तक पहुच चला जाए। बस तो ऐसे सारे लोग आगे आग झपटते रह और उ होंने मशीनगनो की बीच बीच म बरसती गोलियों की एक भी चिन्ता नहीं की।

"पीछा करो इनका ! जरा जमाओ तो इन पर चाबुक !" ग्रिगोरी ने गुस्से स पलकें भपकते हुए चिल्लाकर कहा और सबसे पहले खुद अपने गाँव के लोगो का पीछा किया। घोडा हवा की रफ्तार से दौडाया।

क्रिस्तोनिया भूमते और भचकते हुए नाच के-से अन्दाज से, जाता नजर आया। अभी पिछली गाम का मछली मारते समय सरपत स उसकी एडी बहुत ही बुरी तरह कट गई थी, इसलिए वह आम दिनों की तरह भाग नहीं पा रहा था। सो ग्रिगोरी अपना चाबुक सिर से ऊपर तान हुए उसके बराबर आ गया और घाडे के कन्धा की टपाटप काना म पडी तो क्रिस्तोनिया ने मुडकर देखा और अपनी रफ्तार बढ़ा दी।

"भोडे कहाँ जा रहे हो ? रुको क्या मैं कहता हूँ रुको !" ग्रिगोरी चीखा मगर कोशिश बेकार ही गई। क्रिस्तोनिया न रुकने की बात तक न सोची और उल्टा ही अजीब लगा कि ऊँट की तरह उचक उचककर और तेजी स चलना शुरू कर दिया।

इस पर ग्रिगोरी को इतना गुस्सा आया कि वह अपने आपे म न रहा। उसने बहुत ही बुरी गाली दी घाडे को और तेजी स आगे बढ़ाया,

बराबर आने पर सन्तोष की सांस ली और क्रिस्तोनिया की पसीने से नहाई पीठ पर भरपूर चाबुक जमाया। क्रिस्तोनिया जमीन पर बैठ गया और धीरे धीरे सावधानी से पीठ सहलाने लगा।

ग्रिगोरी के साथ के कज्जाक अपने घोड़े दौड़ाते आगे निकल गये और भागते हुए लोगों को रोकने लगे। मगर, चाबुक उन्होंने नहीं चलाया।

"चाबुक जमाओ चाबुक जमाओ इन लोगों पर।" ग्रिगोरी ने दस्तकारी के काम वाला अपना चाबुक हिलाते हुए फटी सी आवाज में चिल्लाकर कहा। इसी समय उसका घोड़ा बिदका, पीछे हटा और आगे बढ़ने से इन्कार करने लगा। ग्रिगोरी ने जैसे-तैसे उस काबू में किया और सामने भागने लगा तक पहुंचा। बगल से गुजरा तो उसकी निगाह एक झाड़ी के पास ठिठककर चुपचाप मुस्कराते स्तोपान अस्ताखोव पर पड़ी। साथ ही अनीकुश्का हँसी से दोहरा होता नजर आया। उसने अपने हाथ की तुरही बनाई और तीखी, औरतों की-सी आवाज में चीखा—'मारिया हर आदमी अपनी जान के लिए जिम्मेदार होगा। लाल फौजें आ रहे हैं। बस, तो उन्हें पकड़कर छोड़ो।'

अब ग्रिगोरी ने रुद्रभरी जल्दी से लस एक दूसरे गाँव वाले के पीछे घोड़ा दौड़ाया। यह गांव वाला कज्जाक का नाम लिये बिना, फुरती से दौड़ना निकलाई पड़ा। आदमी के गाल बचे बहुत ही जान जाने से लग पर ग्रिगोरी का उसे पहचानने का मौका नहीं मिला और वह कुछ दूर पीछे से ही चिल्लाया— ठहरो ओ कुतिया के बच्चे, ठहर जाओ, वरना मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा।

सहसा ही जल्दी से लम गाँव वाले ने अपनी चाल धीमी की और फिर रुक गया। वह एक खास ढंग से मुड़ा और उसकी आंखों से ज्यादा-से ज्यादा नफरत बरसी। ग्रिगोरी इस मुद्रा से अपने बचपन से ही परिचित था, इसलिए कज्जाक के नाक-नक्शे पर पूरी तरह निगाह पड़ने से पहले ही उसने अनुमान लगा लिया कि हो न हो यह तो मेरे पापा हैं।

पन्तेली के गालों की खाल खींची 'तो, तुम्हारा अपना बाप

कुतिया का बच्चा है क्या ? यानी तुम अपने बाप के ही टुकड़े टुकड़े कर डालने की धमकी दे रहे हो '

उस अपने ऊपर कोई नियंत्रण न रहा और उसकी आँखें इस तरह क्रोध से जलने लगी कि ग्रिगोरी का सारा गुस्सा देखते देखते काफूर हो गया। उसने झटके से घोड़े की रासें खींची और ज़ोर से बोला— 'मैं तुम्हारी पीठ तो पहचानता नहीं। इस तरह आसमान सिर पर क्या उठा रहे हो, पापा ?'

'पहचानता नहीं क्या मतलब तुम्हारा ? यानी, तुमने अपने बाप को नहीं पहचाना ?

बुजुर्गी कुछ ऐसे गलत और बेहूदे ढंग से छू गई कि ग्रिगोरी हँसता हुआ अपने पिता की सीध में आया और उसे समझाते हुए बोला—' पापा पागल न बनो ! तुमने एक ऐसा कोट पहन रखा था जो मैंने तुम्हारे बदन पर पहले कभी देखा ही नहीं। फिर तुम भागे जा रहे थे रेस के घोड़े की तरह। हमेशा की तरह मचक भी तो नहीं रहे थे। ऐसे में भला मैं तुम्हें कैसे पहचानता ?'

घर और बाहर के पहले के दिनों की तरह पेन्तेली एक बार फिर शान्त हो गया। पर हाँफता वह बुरी तरह अब भी रहा। फिर भी, अपने ऊपर और ज्यादा काबू पाते हुए बड़े की हाँ में हाँ मिलाते हुए बोला— 'तुम ठीक कहते हो। कोट नया है। मैंने अपनी भेड़ की खाल के बदले में ले लिया है भेड़ की खाल भारी होती है और इसलिए रास्ते में तकलीफ़देह लगती है और जहाँ तक मेरे मचकने का सवाल है मचकने के लिए वक्त नहीं है। माहज़ाब, यहाँ मचकने का तो सवाल ही नहीं उठता। यानी मौत हमारी आँखों में आँखें डाल रही है और तुम लगड़े पर को लेकर गाल बजा रहे हो

'खैर मौत अभी कोसों दूर है। पीछे लौटो पापा ! और तुमने अपने कारतूस अभी तक नहीं फेंके हैं न ?

'लेकिन, हम लौटकर कहाँ जायें ? बूढ़े ने घृणा से भरकर विरोध किया।

इस पर ग्रिगोरी ने अपनी आवाज ऊँची की और एक एक शब्द

पर बल देते हुए आदेश दिया—' मैं तुम्हें पीछे लौटने का हुक्म देता हूं। पता है कि लडाई के मैदान मे कमाडर का हुक्म न मानने की सजा क्या होती है ?"

शब्दों का प्रभाव पडा। पैतेली ने कधे पर लटकी राइफल ठीक की, लाख न चाहते हुए भी पीछे लौट पडा और एक ओर धीरे चलते बूढे के बराबर पहुचते ही बोला—'इस जमाने में हमारी औलादें ऐसी होती हैं। अपने बाप की इज्जत करने के बजाय या लडाई की मुसीबत से छुटकारा दिलाने के बजाय, औलाद उल्टे उसे लडाई के ऐन मुह मे ढकेलने की कोशिश कर रही है हां भाई हां! एक मेरा बेटा प्योत्र था आत्ममान वाला उस पर हमेशा रहम करे इससे कही बेहतर था मिज़ाज का ठण्डा था। मगर यह बेवकूफ तो बिलकुल ही अलग है माना कि डिवीजनल कमाडर है, और दूसरी तमाम बातें हैं और ठीक ही है। यह तो झाऊ चूहे की तरह तुनुकमिजाज है। मुझे जरा भी ताज्जुब न होगा, अगर मेरे इस बुढापे मे यह मुझे मोची के इस्तमाल की कीलो से काच कोचकर भट्ठी म झोंक देगा।'

उचित बात तातारस्की के कज्जाकों की समझ मे आसानी से आ गई है। ग्रिगोरी ने पूरी कम्पनी जमा की, उसे किसी ढकी हुई जगह ले गया और फिर घोडे पर बठे ही-बठे सख्त लहजे म बोला—

'लाल फौजियों ने नदी पार कर ली है और वे व्योशेंस्काया पहुचने की कोशिश कर रहे हैं। दोन के किनारे लडाई शुरू हो गई है। यह सारा कुछ कोई मजाक नही है, और मैं तुमको बेकार मे भागने की सलाह नही दूगा। अगर तुम सब दूसरी बार भागने की कोशिश करोगे तो मैं मशेस्की के घुडसवार फौजियो को हुक्म दगा और वे तुम्हें काटकर फेंक देंगे।' उसने अपने गाँव के लोगो की भीड पर एक नजर दौडाई और उनके तरह तरह के लिबासो पर दृष्टि गडाते हुए स्पष्ट घृणा से कहा—'तुम्हारी कम्पनी म बुड्ढे-बूढ़ा करकट लोग जमा हो गए हैं, और यह सारी घबराहट वे ही फैला रहे है। क्या शानदार बहादुर हो तुम लोग! लडाई का मैदान छोडकर भागे जा रहे हो, तुम्हारी पतलूनें खराब हुई जा रही हैं। इस पर भी तुम अपने को कज्जाक कहते हो। और बडे

बुजुर्गो, तुम्हारी यह हिम्मत ! तुमने खुद ही कहा है कि तुम लड़ोगे, इस लिए अब टाँगों के बीच खोपड़ियाँ अड़ाने के कोई मानी नहीं होते। तो बस ट्रूप आर्डर में डबल मार्च करते हुए उन झाड़ियों तक पहुँचो, फिर उनके बीच में दोन का रास्ता पकड़ो, बाद को दोन के किनारे किनारे सम्योनोवस्की कम्पनी की तरफ बढ़ो और कम्पनी से मिलने पर लाल फौजियों पर धावा बोल दो ! क्विक मार्च ! और देखो चौकस रहना।"

तातारस्की के गाँव के लोगों ने चुपचाप पूरी बात सुनी और फिर वे उसी तरह झाड़ियों की तरफ बढ़ चले। ग्रिगोरी और उसके साथ के कज्जाक घोड़े दौड़ाकर हवा से बातें करते निकल गये। बूढ़ों ने, मायूसी से, लम्बी लम्बी साँस लेते हुए उनकी तरफ मुड़कर देखा। पतेली की बगल में चलते बूढ़े ओबनिजोव ने तारीफ करते हुए कहा—'ठीक है मगर उस आसमान वाले का लाख लाख शुक्र कि उसने तुम्हें ऐसा बहादुर, नामी जवान बेटा दिया है। असली सूरमा है ! कैसा चाबुक जमाया उसने किस्तेनिया की पीठ पर ! हर आदमी के पैर जहाँ थे, वहीं जमकर रह गये।'

ओबनिजोव की बातों ने पतेली की पितसुलभ भावनाओं को गुदगुदाया और कूरा गदगद स्वर में बोला—'यह कहने की बात नहीं। किसी का ऐसा दूसरा बेटा खोजने के लिए आदमी को बड़ा दुनिया में मारा मारा फिरना पड़ेगी सीना मैडलों से भरा हुआ है इतने मैडल जीतना कोई मजाक नहीं है क्या? इसके मुकाबले प्योत्र को लो। वह भी मेरा ही बेटा था और पहला बेटा था मगर ऐसा नहीं था। मिजाज में नर्मी ज्यादा थी और कहीं न कहीं उसमें कुछ न कुछ कमी जरूर थी। कमीज के नीचे दिल औरत का था। लेकिन यह दूसरा बेटा मेरा ग्रिगोरी, बिलकुल मेरी तरह है जान और जोश तो उसमें मुझसे भी ज्यादा है।

ग्रिगोरी दुश्मन की नजर बचाते हुए अपने आधे ट्रूप के साथ साथ कारगीन घाट तक जा पहुँचा और जंगल में पहुँचने पर उसने और उसके साथ के लोगों ने मान को पूरी तरह सुरक्षित समझा। लेकिन, दूर की पहाड़ी पर चोटी से लाल फौजियों ने इन्हें देख लिया और एक टीम ने

अपनी तोपों के दहाने खोल दिए। पहला गोला सरपत के पौधों के सिरों के ऊपर से सरसराता निकला और किसी दलदली खड्ड म जा गिरा, फूटा नहीं। लेकिन दूसरा गोला सड़क के पास ही, बूढ़े काले देवदार की नंगी जड़ों के बीच फूटा तो आग सी छिटकी और धड़ाके से कज्जाकों के कान के पर्दे फटने लगे। वे मिट्टी और सड़ी हुई लकड़ी के टुकड़ों की बौछारों से नहा उठे।

इसी समय घोड़े की दुमची के पास किसी गीली चीज़ के धड़ाक से गिरने की आवाज़ हुई, तो ग्रिगोरी अपने आप आगे की ओर झुक गया और उसने अपनी आंखों पर हाथ की आड़ कर ली।

धड़ाके से ज़मीन हिल गई। कज्जाकों के घोड़े बिदके और कूल्हों के बल बठ गए, मगर फिर, जसे कि किसी कमान पर, आगे की तरफ ताबड़तोड़ भागे। पर तु ग्रिगोरी का घोड़ा भयानक रूप से पीछे हटा, ढह पड़ा और धीरे धीरे लुढ़कने सा लगा। ग्रिगोरी ने जल्दी से कूद-कर घोड़े की लगाम पकड़ ली। अब दो गोले और हवा में सरसराते गुज़रे और फिर जगल के सिरे पर सन्नाटा हो गया। बारूद का धुआँ घास की पत्तियों पर जम गया। आसपास से ताज़ी उलटी मिट्टी सकड़ी की चैलियों और अधमडी लकड़ी का सकेत मिलने लगा। दूर झुरमुट म मगपाई चिड़िया उत्सुकता स चहचहाती रही।

ग्रिगोरी का घोड़ा हीसा। उसके थरथराते हुए पिछले पैर धँसने लगे। दद से दांत निकल आये गदन ऐंठ गई और मखमली भूरे नथुनों से गुलाबी से झाग के बुलबुले फूटने लगे। घोड़े का पूरे का पूरा बदन बुरी तरह कांपने लगा और नीचे की खाल रह रहकर सिहरने लगी।

'काम तमाम हो गया क्यों ?" एक घुड़सवार कज्जाक ने ज़ोर से पूछा। ग्रिगोरी ने कोई जवाब नहीं दिया। वह घोड़े की बुझती हुई आंखों म आँखें डाले रहा। उसने तो ज़ख्म तक नहीं देखा। ज़रा दूर-भर हट गया। इस पर घोड़े ने झटके मे आगे बढ़ने की कोशिश म अपने को समेटा, और फिर सहसा ही घुटनों के बल गिर पड़ा। इसके साथ ही उसकी गदन इस तरह झूल गई, जस कि वह मालिक से किसी

कुसूर के लिए माफी माग रहा हो। इसके बाद खोखले ढग से कराहता हुआ वह बाजू के बल झुक गया और उसने सिर उठाने की कोशिश की। पर साफ है कि उसकी ताकत टूट चुकी थी। फिर, कँपकँपी धीरे-धीरे खत्म हो गई आँखें चमकी कि चमककर रह गई और गर्दन पसीने मे नहा उठी। केवल टखना के पास नज़र हल्के हल्के बजती खुरी और काठी का बद धीरे धीरे काँपता नजर आया।

ग्रिगोरी ने जानवर की बाइं बाजू की तरफ निगाह दौड़ाई तो एक गहरा जख्म नजर आया और जख्म से काले खून की धार उमडती दीखी। इस बीच दूसरा कज्जाक घोडे से नीचे उतरा। ग्रिगोरी की आँखो से आँसू बहने लगे। उसने उधर ताका नही और झटक झटककर बोला— गोली मारकर एक बार मे ही इस खत्म कर दो।' उसने अपनी माउजर राइफल कज्जाक की ओर बढाई और उसके घोडे पर सवार होकर अपने स्क्वड्रन के ठिकाने की तरफ रवाना हो गया। वहाँ धाराप्रवाह लडाई चालू मिली।

लाल सेना के टुकडो ने तडके नये सिरे से हमला कर दिया था। धुध के पसार के बीच उनकी कतारें उठी और चुपचाप स्क्वेस्काया की दिशा मे बढ़ी थीं। दाई ओर, बाढ के पानी स लबालब एक खड्ड ने पलभर को उनका रास्ता रोका पर दूसरे क्षण वे पानी म हिल गए और गोलियो वगरा के अपने थैले और राइफलें हाथो में ऊपर उठाये ही-उठाये इस पार स उस पार पहुच गय।

थोडी दर बाद, दोन के किनारे की पहाड़ियो पर से चार बटरियाँ गरजने लगीं। फिर तोपो के गोलो ने पूरे जगल को अपनी लपेट म लिया और कि लेहियो का पार स भी आग बरसने लगी। अब लाल फौजी अपनी राइफलें जमीन पर घसीटते हुए मार्च करने के बजाय दौडने लगे। उनमे कोई घाध कष्ट के प्राण पर तोपा के गोला के धडाके होते और उनके टुकड हवा म उडत रह। गोल पडा का तार-तार करते रहे और पड चरमराकर जमीन पर गिरते रहे। धुएँ के सफेद बादल आसमान म उमडत रहे। साथ ही दो मशीनगनें भी जरा-जरा दर पर खटखटाती रहीं।